

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये चतुर्विंशं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে চতুর্বিংশং দশকম্ ॥

প্রহ্লাদচরিতর্ননম্

হিরণ্যাক্ষে পোত্রিপ্রররপুষা দেব ভরতা  
হতে শোকক্রোধগ্নপিতধৃতিরেতস্য সহজঃ।  
হিরণ্যপ্রারম্ভঃ কশিপুরমরারাতিসদসি  
প্রতিজ্ঞামাতেনে তব কিল বধার্থং মধুরিপো ॥ 24.1 ॥

বিধাতারং ঘোরং স খলু তপসিৎরা নচিরতঃ  
পুরঃ সাক্ষাৎকুরন সুরনরমৃগাদৈরনিধনম্।  
বরং লঙ্করা দৃষ্টো জগদিহ ভরনায়কমিদং  
পরিষ্কন্দম্বিন্দ্রাদহরত দিবং ব্রামগণযন্ ॥ 24.2 ॥

নিহন্তং ব্রাং ভূযস্তব পদমরাপ্তস্য চ রিপো -  
বহির্দৃষ্টৈরন্তর্দধিত হৃদয়ে সুক্ষ্মরপুষা।  
নদনুচ্চৈস্ত্রাপ্যাখিলভুরনান্তে চ মৃগযন্  
ভিষা যাতং মংরা স খলু জিতকাশী নিব্রুতে ॥ 24.3 ॥

ততোহস্য প্রহ্লাদঃ সমজনি সুতো গর্ভরসতো  
মুনের্নীণাপাণেরধিগতভরদ্রুত্তিমহিমা।  
স বৈ জাত্যা দৈত্যশ্শিশুরপি সমেত্য ব্রযি রতিং  
গতস্তুদ্রুত্তানাং বরদ পরমোদাহরণতাম্ ॥ 24.4 ॥

সুরারীণাং হাস্যং তব চরণদাস্যং নিজসুতে  
স দৃষ্টরা দুষ্টাত্মা গুরুভিরশিশিক্ষচ্চিরমমুম্।

गुरुप्रोक्तं चासारिदमिदमभद्राय दृढमि -

त्यपाकुरन् सर्गं तत्र चरणभङ्गैर्यत्र रब्धे ॥ 24.5 ॥

अधीतेषु श्रेष्ठं किमिति परिपृष्टैश्च तनये

भ्रष्टं रयामभिगदति पर्याकुलधृतिः।

गुरुभ्या रोषित्वा सहजमतिरस्येत्यभिरिदन्

रधोपायानस्मिन् रयतनुत भ्रष्टपादशरणे ॥ 24.6 ॥

स शूलैरारिद्वः सुबह्व मथितो दिग्भ्रजगणै -

र्महासर्पैर्दष्टोऽप्यनशनगराहारविधुतः।

गिरीन्द्रारम्भिष्टोऽप्यहह ! परमात्मनि रिभो

रयि न्यस्तात्त्रां किमपि न निपीडामभजत ॥ 24.7 ॥

ततः शङ्करिष्टः स पुनरतिदुष्टोऽस्य जनको

गुरुक्त्या तदगेहे किल ररुणपाशैस्तमरुणं।

गुरोश्चासान्निध्ये स पुनरनुगान् दैत्यतनयान्

भ्रष्टं परममपि रिञ्जानमशिषं ॥ 24.8 ॥

पिता शृण्वन् बालप्रकरमखिलं त्रस्तुतिपरं

रुषाक्षः प्राहेनं कुलहतक कस्ते बलमिति।

बलं मे रैकुर्षुस्तत्र च जगतां चापि स बलं

स एव त्रैलोक्यं सकलमिति धीरोऽयमगदीं ॥ 24.9 ॥

अरे क्लासौ क्लासौ सकलजगदात्मा हरिरिति

प्रभिन्ने स्म स्तुभं चलितकररालो दितिसुतः।

अतः पश्चाद्विषेण न हि रदितुमीशोऽस्मि सहसा

कृपात्नं रिश्वात्नं परनपुरवासिन् मृडय माम् ॥ 24.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुर्विंशं दशकं समाप्तम् ॥